पाठ 13. भारत-दर्शन–मुंबई की सैर

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को मुंबई शहर के दर्शनीय स्थलों की सैर कराना है। इस पाठ द्वारा बच्चे न केवल मुंबई दर्शन कर पाएँगे, बल्कि मुंबई के बारे में कुछ रोचक जानकारी भी प्राप्त कर पाएँगे। आजकल पत्र लिखना लगभग समाप्त-सा होता जा रहा है। यह पाठ बच्चों को पत्र विधा से भी जोड़ता है।

पाठ का सारांश

तपन मंजुल की मौसी का बेटा है। मंजुल मुंबई में रहती है। वह तपन के मुंबई आने के कार्यक्रम के बारे में जानकर बहुत खुश होती है। वह पत्र के माध्यम से उसे मुंबई से जुड़ी बहुत-सी रोचक जानकारियाँ देती है तथा उसे बताती है कि उसके मुंबई आने पर वे सब परिवार के साथ कहाँ-कहाँ घूमने जाएँगे।

अध्यापन संकेत

पत्र पढ़ने-पढ़ाने से पूर्व बच्चों को पत्र विधा से परिचित करवाएँ। उन्हें बताएँ कि पत्र को चिट्ठी या खत भी कहते हैं। वर्तमान में संदेश भेजने के लिए एस॰एम॰एस॰ या ई-मेल का उपयोग किया जाता है परंतु पूर्व के कालों में राजा-महाराजा अपने संदेश कबूतरों अथवा घुड़सवारों के माध्यम से पहुँचाया करते थे। धीरे-धीरे लिफ़ाफ़े पर नाम-पता लिखकर डाकिये द्वारा चिट्ठियाँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाई जाने लगीं। यदि कोई संदेश तुरंत पहुँचाना होता था तो तार का प्रयोग किया जाता था। तार सेवा भी अब बंद हो गई है। बच्चों को इस संबंध में संक्षिप्त जानकारी दें।

अब पाठ का वाचन शुरू करें और बताएँ कि यह पाठ एक पत्र है। वाचन के साथ-साथ अथवा बाद में बच्चों से पूछिए–

- वे घूमने के लिए कहाँ-कहाँ जा चुके हैं। उन्हें कौन-सा स्थान सबसे अच्छा लगा आदि। प्रश्नों द्वारा बच्चों की रोचकता को बनाएँ एवं बढ़ाएँ।
- उन्हें बताएँ कि घूमना-फिरना अच्छा होता है। इससे हम अलग-अलग स्थानों की रोचक एवं ज्ञानवर्धक बातें जान पाते हैं।
- पाठ में आए संयुक्ताक्षर वाले शब्दों प्यार, प्रणाम, छुट्टी, अच्छा आदि को श्यामपट्ट पर लिखकर समझाएँ।

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।